श्री चौबीसी विधान

रचयिता
मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

प्रकाशक
श्री जैनोदय विद्या समूह

- कृति : श्री चौबीसी विधान
- आशीर्वाद : आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज
- रचयिता : मुनि श्री १०८ सुव्रतसागरजी महाराज
- संयोजन : ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
- प्रसंग : आचार्यश्री का ५०वाँ मुनि दीक्षा संयम स्वर्ण महोत्सव एवं मुनिश्री का २०वाँ मुनि दीक्षा दिवस
- संस्करण : प्रथम, २०१८
- आवृत्ति : ११००
- लागत मूल्य : १०/-
- प्राप्ति स्थान : ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
  94251-28817
- पुण्यार्जक :
- मुद्रक : विकास आफसेट, भोपाल

चौबीसी पूजन

स्थापना (मात्रिक सवैया)

वृषभ अजित शंभव अभिनंदन सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनंत॥
धर्म शांति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकायें शीश॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर-अवतर.....।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः.....।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो.....।

(पुष्पांजलिं....)

(लय : चौबीसी पूजनवत्)

हम लाये प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने।
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं.....।

चन्दन सम प्रभु के धाम, चन्दन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चन्दन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चंदन.....।

जो दें दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिसको पुंज धरें॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान्.....।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं.....।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो।
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं.....।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं.....।

आतम पुद्गल का बंध, सारे द्वन्द करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं.....।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को।
हम फल लाये जिनद्वार, निज के रागी हो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं.....।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पायें आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

समुच्चय श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

वर्तमान में गर्भ के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं.....।

वर्तमान में जन्म के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं.....।

वर्तमान में तपों के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं.....।

वर्तमान में ज्ञान के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं.....।

वर्तमान में मोक्ष के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः॥

जयमाला

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाए मिले निज मुक्ति सों॥
भवचक्र निवारी, नवग्रहहारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शंभव संभव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥ १॥
जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।

जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥२॥
जय सुविधिनाथ दें सुविधिनाँव, जय शीतलप्रभु दें आत्मछाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश,जय वासुपूज्य ब्रह्मा-विलास॥३॥
जय विमलनाथ हो चित् बसन्त, जयजय अनन्त प्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शांतिप्रदाता शांतिनाथ॥४॥
जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्तियान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥५॥
जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय रिद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥६॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो।
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥
प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जायें।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गायें॥
भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

अर्घ्यावली

(लय—माता तू दया करके.....)

जिनवर की पूजा से, सबका मंगल होता।
हम करें नमोऽस्तु तो, हर कार्य सफल होता॥
जब धर्म बिना प्राणी, कर्मों के दुख पाये।
तब वृषभनाथ स्वामी, सुख शांति धर्म लाये॥

उसने वो सब पाया, जिसने जो कुछ चाहा।
सो अर्घ्य चढ़ा हमने, तुमसे तुमको चाहा॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो अजितनाथ प्रभु की, बहु भक्ति करता हो।
जग मित्र बने उसका, कभी बाल न बांका हो॥
हम अंतर बाहर के, रिपु की जय चाह रहे।
सो अर्घ्य चढ़ा तुमको, तुमसे ही माँग रहे॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

दुनियाँ का वैभव तो, शंभवप्रभु त्याग चुके।
जब निज में लीन हुये, तो त्रय जग आन झुके॥
फिर त्रय जग के सिर पर, प्रभु की छत्र छाया।
सो अर्घ्य चढ़ा तुमको, माँगें तेरी छाया॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

पर के अभिनंदन से, निज खोते पर पाते।
प्रभु के अभिनंदन से, पर खोते निज पाते॥
प्रभु सा बन जाने को, प्रभु वंदन करते हैं।
सो अर्घ्य चढ़ा प्रभु का, अभिनंदन करते हैं॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

हम रखें मोह मति को, सो राग-द्वेष होता।
तब रत्नत्रय के बिन, कब आत्म ध्यान होता॥
हे सुमतिनाथ जिनवर, प्रभु हमें सुमति देना।
हम अर्घ्य चढ़ायें तो, हमको सद्गति देना॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

दुनियाँ के दलदल से, प्रभु दूर हुये ऐसे।
दुनियाँ में रहकर भी, हो खिले कमल जैसे॥
सो पद्मप्रभु जैसा, बनने जग ललक रहा।
यह अर्घ्य चढ़ाया तो, परमातम झलक रहा॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

प्रभु दया भाव धरके, निज आतम शृंगारें।
सो छोड़ दिया जग पर, हम तुमको स्वीकारें॥

हे सुपार्श्व प्रभु हमको, तुम नहीं भूल जाना।
हम अर्घ्य चढ़ा चाहें, बस चरण धूल पाना॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

नभ के चंदा से तो, सरवर के कमल खिलें।
लेकिन चंदाप्रभु से, भव्यों के कमल खिलें॥
सो नभ का चंदा तज, हम तुमको पूज रहे।
यह अर्घ्य चढ़ाकर के, निज में जिन खोज रहे॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जग के रिश्ते नाते, ज्यों फूल और काँटे।
जिनमें आतम उलझी, तो मिले कर्म चाँटे॥
पर पुष्पदंत प्रभु ने, काँटे चाँटे छोड़े।
सो अर्घ्य चढ़ा सबने, सिर झुका हाथ जोड़े॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

निज कुल सिद्धि को तुम, जिन कुल के सिद्ध बने।
हम भी गुरुकुल पाके, तुम जैसे सिद्ध बनें॥
हे शीतल! प्रभु हमको, जिनकुल का दान करो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, भक्तों का ध्यान रखो॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं.....।

हर मुश्किल का हल हो, हाँ! आज नहीं कल हो।
जो चुने आपका पथ, उसका चित् उज्ज्वल हो॥
हे श्रेयांसनाथ हर लो, हम संकट दुख को भी।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, प्रभु थामो हमको भी॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो बाल ब्रह्म व्रत ले, वो निज से प्रेम करे।
अर्हन्त महन्त बने, तो मुक्तिवधू भी वरे॥
सो वासुपूज्य जैसा, अपना भी स्वयंवर हो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, यह चमत्कार कर दो॥१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो देह मैल धोकर, तन को चमकाते हैं।
वो अपनी आतम को, संसारी बनाते हैं॥

पर विमलनाथ प्रभु ने, तन तज चेतन पाया।
सो अर्घ्य चढ़ा हमने, निज चेतन चमकाया॥१३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

संसार अनंत रहा, जिसमें हैं पाप अनन्त।
इन सबको तज तुमने, पाया चैतन्य अनन्त॥
सो अनन्तनाथ स्वामी, हमको भी करो अनन्त।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, महकादो आत्म बसन्त॥१४॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

बस एक धर्म ही हो, लेकिन बहु-मत होते।
यह तथ्य समझकर ही, संसार विगत होते॥
प्रभु धर्म धारकर ये, निज आत्म धर्म पाये।
सो अर्घ्य चढ़ा हम भी, तुम सम बनने आये॥१५॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

संसार शांति खोजे, पर कहाँ मिली शांति।
जब दर्श किया प्रभु का, तो तनिक मिली शांति।
हे शांतिनाथ स्वामी, अपने सम शांति भरो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, भक्तों की अशांति हरो॥१६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

सब द्रव्य पदार्थों में, बस जीव मुख्य होता।
उस पर करुणा करके, निज आत्म सौख्य होता॥
वह कुन्थुप्रभु पाये, जिसकी अपनी इच्छा।
सो अर्घ्य चढ़ायें हम, तुम दे देना दीक्षा॥१७॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

नभ मंडल के जैसे, अरनाथ असीमित हैं।
गुणगान करें कैसे, क्योंकि शब्द तो सीमित हैं॥
फिर भी अंतिम क्षण तक, गुणगान न छोड़ेंगे।
यह अर्घ्य चढ़ा हम भी, सिद्धों तक दौड़ेंगे॥१८॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

संसार जीतने को, हर व्यक्ति चाह रहा।
पर आत्म विजय करना, जिन सेवक माँग रहा॥

सो मल्लिनाथ अपना, तुम भक्त बना लेना।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, शुद्धात्म दान देना॥१९॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

हो भले जन्म छोटा, पर रहे सु-व्रती का।
सागर जैसा जीवन, व्रत बिना रहा तीखा॥
सो सुव्रतनाथ हमें, अपने सुव्रत दे दो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, चरणों की रज दे दो॥२०॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जिसके मन में रहते, नमिनाथ चिदानंदी।
वह ऋद्धि-सिद्धि पाके, बनता परमानंदी॥
सो भक्तों के मन में, अपना डेरा डालो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, चैतन्य सजा डालो॥२१॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

दुख जीवों के सुनकर, संसार-भोग छोड़े।
सो करुणानिधि तुमको, जग रोज हाथ जोड़े॥
हे नेमिनाथ तुम सम, हम अपना व्याह रचें।
यह अर्घ्य चढ़ा हम भी, तुम सम गिरनार चढ़ें॥२२॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जय किया कमठ का मठ, उपसर्ग सहन करके।
सो अंदर बाहर के, रिपु झुके नमन करके॥
दो वही वज्र पौरुष, जो पारस मणि कर दे।
हम अर्घ्य चढ़ायें तू, कुछ ध्यान इधर कर दे॥२३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो पर से सुलझ गये, वे बाजी मार गये।
जो निज में उलझ गये, वे भव से पार गये॥
वे महावीर हो तुम, प्रभु पूज्य वीतरागी।
यह अर्घ्य चढ़ा तुमसे, जिन संपत्ती माँगी॥२४॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(पूर्णार्घ्य)

प्रभु हाथ पकड़ लो तुम, है जगत भीड़ भारी।
हम खो न कहीं जायें, ये तेरी जबाबदारी॥
यह चौबीसों प्रभु से, नित रही प्रार्थना है।
हम अर्घ्य बनें तुम सम, बस यही भावना है॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं.....।

(जाप्य)

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः॥

जयमाला

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
उसे नमोस्तु जिससे हुये, चौबीसों भगवान॥

(ज्ञानोदय)

आदिनाथ से वृषभनाथ तक, तीर्थंकर चौबीस रहे।
वर्तमान की चौबीसी को, भक्त झुकाते शीश रहे॥
क्योंकि इन्होंने दुनियाँ तजकर, वीतराग विज्ञान लिया।
वही रहा रत्नत्रय साँचा, धार दिगम्बर रूप लिया॥१॥

फिर अर्हंत दशा को पाकर, समवसरण में तत्त्व दिये।
कर्म ध्यान से नष्ट किये तो, नमोस्तु सारे भक्त किये॥
हम भी बनें उन्हीं के जैसे, अपना आतम प्रकटायें।
रागद्वेष को छोड़ सकें हम, निज अर्हंत रूप पायें॥२॥

सिद्धालय सी छाया पायें, दुनियाँ का भव, भ्रमण तजें।
विषय विकारों भोग नजारों, मोह वहारों में न फँसे॥
कर्म कटारों में नहिं उलझें, बस आतम में रमण करें।
वसें शीघ्र लोकाग्र शिखर पर, सिद्धों जैसे गमन करें॥३॥

अपनी केवल यही प्रार्थना, अतः आपको खोज लिया।
सभी सहारों से क्या लेना, मात्र आपको पूज लिया॥
नहीं जरूरत कुछ करने की, लिया सहारा जब तेरा।
चरणों में बस करें गुजारा, देख नजारा अब तेरा॥४॥

ज्ञान उजाला मिला आपका, यही गुजारा काफी है।
भवसागर से तिरने तेरा, एक इशारा काफी है॥
मिले ठिकाना मात्र आपका, फिर हर चीज पराई है।
'सुव्रत' ने अंतस में ऐसी, 'विद्या' ज्योति जलाई है॥५॥

(सोरठा)

आत्म बने सिद्धात्म, यही हमारी आश है।
सो भजने परमात्म, नमोस्तु अपने पास है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

चौबीसों स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

❑ ❑ ❑